

**CLASS : 10th (Secondary)**

**3563/3513**

**Series : Sec. M/2018**

Total No. of Printed Pages : 15

**MARKING INSTRUCTIONS AND MODEL ANSWERS**

**ANIMAL HUSBANDRY**

*(Academic/Open)*

*(Only for Fresh/Re-appear Candidates)*

---

उप-परीक्षक मूल्यांकन निर्देशों का ध्यानपूर्वक अवलोकन करके उत्तर- पुस्तिकाओं का मूल्यांकन करें। यदि परीक्षार्थी ने प्रश्न पूर्ण व सही हल किया है तो उसके पूर्ण अंक दें।

---

**General Instructions :**

- (i) *Examiners are advised to go through the general as well as specific instructions before taking up evaluation of the answer-books.*
- (ii) *Instructions given in the marking scheme are to be followed strictly so that there may be uniformity in evaluation.*
- (iii) *Mistakes in the answers are to be underlined or encircled.*
- (iv) *Examiners need not hesitate in awarding full marks to the examinee if the answer/is/are absolutely correct.*

**3563/3513**

**P. T. O.**

- (v) *Examiners are requested to ensure that every answer is seriously and honestly gone through before it is awarded mark/s. It will ensure the authenticity as their evaluation and enhance the reputation of the Institution.*
- (vi) *A question having parts is to be evaluated and awarded partwise.*
- (vii) *If an examinee writes an acceptable answer which is not given in the marking scheme, he or she may be awarded marks only after consultation with the head-examiner.*
- (viii) *If an examinee attempts an extra question, that answer deserving higher award should be retained and the other scored out.*
- (ix) *Word limit wherever prescribed, if violated upto 10%. On both sides, may be ignored. If the violation exceeds 10%, 1 mark may be deducted.*

- (x) *Head-examiners will approve the standard of marking of the examiners under them only after ensuring the non-violation of the instructions given in the marking scheme.*
- (xi) *Head-examiners and examiners are once again requested and advised to ensure the authenticity of their evaluation by going through the answers seriously, sincerely and honestly. The advice, if not heeded to, will bring a bad name to them and the Institution.*
- 

**महत्त्वपूर्ण निर्देश :**

- (i) *अंक-योजना का उद्देश्य मूल्यांकन को अधिकाधिक वस्तुनिष्ठ बनाना है। अंक-योजना में दिए गए उत्तर-बिन्दु अंतिम नहीं हैं। ये सुझावात्मक एवं सांकेतिक हैं। यदि परीक्षार्थी ने इनसे भिन्न, किन्तु उपयुक्त उत्तर दिए हैं, तो उसे उपयुक्त अंक दिए जाएँ।*
- (ii) *शुद्ध, सार्थक एवं सटीक उत्तरों को यथायोग्य अधिमान दिए जाएँ।*

- (iii) परीक्षार्थी द्वारा अपेक्षा के अनुरूप सही उत्तर लिखने पर उसे पूर्णांक दिए जाएँ।
- (iv) वर्तनीगत अशुद्धियों एवं विषयांतर की स्थिति में अधिक अंक देकर प्रोत्साहित न करें।
- (v) भाषा-क्षमता एवं अभिव्यक्ति-कौशल पर ध्यान दिया जाए।
- (vi) मुख्य-परीक्षकों/उप-परीक्षकों को उत्तर-पुस्तिकाओं का मूल्यांकन करने के लिए केवल Marking Instructions/ Guidelines दी जा रही है, यदि मूल्यांकन निर्देश में किसी प्रकार की त्रुटि हो, प्रश्न का उत्तर स्पष्ट न हो, मूल्यांकन निर्देश में दिए गए उत्तर से अलग कोई और भी उत्तर सही हो, तो परीक्षक, मुख्य-परीक्षक से विचार-विमर्श करके उस प्रश्न का मूल्यांकन अपने विवेक अनुसार करें।

**निर्देश :** (i) सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

(ii) प्रत्येक प्रश्न के अंक प्रश्न के साथ दिये गये हैं।

**नोट :** निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर प्रश्न में से ही लिखें। प्रत्येक प्रश्न का एक अंक है।

1. मुर्गी चेचक रोग के छालों पर कीटाणुनाशक मलहम लगाना चाहिए।

2. मुँह व खुर रोग की प्रभावित दर अधिक होती है। 1
  3. क्षय रोग में पीड़ित पशु के फेफड़ों में गाँठें पाई जाती हैं। 1
  4. दूध दोहने के बाद दूध को शीघ्र ठंडा करना चाहिए। 1
  5. दूध चिलिंग केन्द्र पर दूध को ठंडा किया जाता है। 1
  6. पशु की अधिकतर खुराक कार्बोज होती है जो आहार का 75% के लगभग है। 1
  7. संक्रामक गर्भपात में बच्चा समय से पहले गर्भाशय से बाहर आता है। 1
  8. फाइलेरिया कीड़े का प्रकोप पशुओं के छोटे बच्चों में अधिक होता है। 1
  9. एक मास की आयु के बच्चे को उसके भार का 10वाँ भाग दूध पिलाना चाहिए। 1
- नोट :** निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर बहुत ही संक्षेप में लिखिए। प्रत्येक प्रश्न के **दो** अंक हैं।
10. परोपजीवी वह जीव होता है जिसका निर्भार्य दूसरे जीव पर होता है। 2

11. दूध का सी० ओ० बी० टेस्ट से दूध की खटास का पता चलता है। इस टेस्ट के लिए एक परखनली में 5 मिली दूध लेते हैं और गर्म करते हैं। यदि दूध फट जाता है, तब दूध में खटास 2% से अधिक होती है। 2
12. मुर्गियों में चेचक रोग के चर्म प्रकार के निम्न लक्षण होते हैं : 2
- (i) मुर्गी के कलगी, दाढी और मुँह पर फफोले से बन जाते हैं।
  - (ii) फफोलें बाद में घाव बनाते हैं।
13. रेड वाटर रोग के उपचार में निम्न औषधियाँ प्रयोग होती हैं : 2
- (i) बरेनील, (ii) ट्रिपेज ब्लू (iii) एनट्रीसाईड प्रोसाल्ट आदि।
14. वसा तत्त्व की आहार में निम्न आवश्यकता है : 2
- (i) ये शरीर में गर्मी पहुँचाने के काम आती हैं। यदि अधिक मात्रा में पशु को खिलाई जाए, तब ये शरीर में जमा हो जाती हैं।
  - (ii) शरीर में आवश्यकतानुसार इस जमीं हुए वसा का प्रयोग होता है।

15. फाउल पोक्स वैक्सीन मुर्गियों में माता रोग से बचाव के लिए 8-10 हफ्ते की उम्र में लगाते हैं। 2
16. प्रवर प्रजनन में एक ही नस्ल की मादा को उसी नस्ल के अच्छे साँड से गर्भीत कराते हैं। इस विधि से एक ही नस्ल की बढौत्तरी के साथ-साथ दूध उत्पादन बढता है। 2
17. पिस्सू परोपजीवी दो प्रकार के होते है। (i) उड़ने वाले (ii) न उड़ने वाले। 2
18. पशु का भरा मुँह छः वर्ष की आयु में होता है। जिसमें 8 पूरे दाँत होते हैं। इस अवस्था में पशु पूरा जवान हो जाता है। 2
- नोट :** निम्न प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिए। प्रत्येक प्रश्न के **तीन** अंक है।
19. दूधारू पशु की परख के अंक निम्न है : 3
- (i) नस्ल के अनुसार शरीरिक बनावट - 20 अंक
- (ii) दूध उत्पादन के अंग (थन की संख्या, बनावट, लम्बाई आदि लोटी की बनावट आदि) - 45 अंक

(iii) खाने की क्षमता - 15 अंक

(iv) अगली, पिछली टाँगों की लम्बाई व दशा - 20 अंक

**20.** पशुधन विकास कार्य को सफल बनाने के लिए सुविधाएँ निम्न हैं : 3

(i) संक्रामक/असंक्रामक बिमारियों का टीकाकरण

(ii) प्रजनन सम्बन्धि सुविधाएँ

(iii) पशु उत्पादन पदार्थों की बेचने की सुविधा

(iv) कर्ज सुविधाएँ

(v) चारा व बीज सुविधाएँ

(vi) प्रोत्साहन तथा प्रजनन सम्बन्धित ट्रेनिंग (पशुपाल को)

**21.** रानीखेत रोग एक विषाणु द्वारा शीघ्र संक्रामक रूप में फैलने वाला एक भयंकर और उग्र रोग है। इससे सभी उग्र के कुकट प्रभावित होते हैं। 3

**22.** बॉयलर्स मुर्गियाँ वे मुर्गी होती है जो माँस के लिए पाली जाती हैं ये मुर्गियाँ थोड़े समय में अधिक वजन प्राप्त कर लेती हैं। ये मुर्गियाँ 750-1200 ग्राम भार तक पाली जाती है और इनका माँस बढ़िया श्रेणी का होता है। 3



23. भैसों में चेचक रोग के लक्षण अधिकतर थनों व लोटी (Udder) पर दिखाई देते हैं। ये यहाँ पर लाल-लाल दाने के रूप में दिखाई देते हैं। थन आदि छूने पर पशु को दर्द होता है और पशु बेचैन रहता है। पशु की प्रतिदिन की उत्पादन घट जाती है और दूध दोहन में परेशानी होती है। 3

24. संकर प्रजनन में देशी नस्ल की मादा को उच्चवशीय नस्लों वाली विदेशी नस्ल के नर से गर्भित कराते हैं। पैदा हुआ बच्चा संकर नस्ल का होता है। इससे उत्पादन के साथ-साथ वंशीय अणुवंशता बढ़ती है। 3

**नोट :** निम्न प्रश्नों के उत्तर कम से कम **100** शब्दों में लिखिए। प्रत्येक प्रश्न के **पाँच** अंक हैं।

25. दूध उत्पादन बढ़ाने के प्रजनन के निम्न साधन है : 5

- (i) एक ही नस्ल में अधिक दूध देने वाली मादाओं की बढ़ौत्री एवं कम दूध देने वाले पशुओं की कटौती करना होता है, इससे दूध उत्पादन बढ़ता है और कम उत्पादक वाली मादाओं का अच्छे उत्पादन वाली मादा के नर पशु से संभोग करने से पैदा हुआ बच्चे का उत्पादन अधिक होता है।

- (ii) प्रवर प्रजनन विधि में एक ही नस्ल की मादा को उसी नस्ल के नर से मिलाते हैं। पैदा हुआ बच्चा का उत्पादन उसकी वंशावली की मादा से अधिक होता है।
- (iii) संकर प्रजनन प्रणाली में दो विभिन्न नस्लों की मादा व नर की मिलाई की जाती है और उत्पन्न पशु को संकरण कहते हैं। इस विधि से उत्पन्न पशु की दूध देने की क्षमता एवं मात्रा अपनी माँ से अधिक होती है।

या

परोपजीवी के निम्न प्रकार हैं :

- (i) स्थाई परोपजीवी जैसे अन्दरुनी कीड़े (गोल व चपटे कीड़े तथा फीतेदार कीड़े और चीचड़ियाँ)
- (ii) अस्थायी परोपजीवी जैसे जोक
- (iii) सर्व अधिक परोपजीवी जैसे मच्छर, मक्खी, पिस्सू आदि

रिहायश के आधार पर :

- (i) आन्तरिक परोपजीवी जैसे गोले कीड़े फीतेदार कीड़े आदि।
- (ii) बाहरी परोपजीवी जैसे चिचड़ी, जूए और पिस्सू आदि।

(iii) आकार के आधार पर :

- (a) एकजीवी जैसे प्रोटोजोआ परोपजीवी आदि
- (b) गोल, चपटे आदि

**26.** स्वच्छ दूध वह दूध होता है जो स्वस्थ मादा से स्वच्छ वातावरण में, स्वच्छ बर्तनों में, स्वस्थ ग्वाला द्वारा पूर्ण दूध निकालने की प्रक्रिया द्वारा निकाला गया हो।

पशुपालक को स्वच्छ दूध उत्पादन के लिए निम्न सावधानियाँ अपनानी चाहिए :

- (i) पशु का समय पर टीकाकरण एवं संक्रामक रोगों का सही इलाज कराना।
- (ii) पशु का समयवध संक्रामक रोगों का टेस्टीकरण करवाना।
- (iii) मादा पशु का स्वच्छ वातावरण एवं रहने के स्थान का प्रबन्ध करना।
- (iv) मादा पशु से स्वच्छता से दूध निकलना तथा उचित व्यवस्था से प्रोसेशी यूनिट में भेजना आदि।

5

या

कृत्रिम गर्भाधान, गर्भाधान की वह विधि है जिसमें मादा विष्ट मादा पशु का प्रजनन, सही समय पर एक नली द्वारा वीर्य, मादा पशु की बच्चेदानी में पहुँचाया जाता है।

कृत्रिम गर्भाधान के निम्न लाभ हैं :

- (i) इस तकनीक से एक दिन में बहुत पशुओं को गर्भधारण किया जा सकता है।
- (ii) प्राकृतिक सम्भोग में एक नर पशु से एक समय में एक या दो मादा पशु को गर्भ करा सकते हैं परन्तु इस विधि से 25-100 पशु गर्भित कर सकते हैं।
- (iii) इस प्रक्रिया के लिए उत्तम वंशावली के कुछ (थोड़े) नर ही पशुपालक को पालने की जरूरत है।
- (iv) इस तकनीक में अच्छी वंशावली के नर का वीर्य एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाकर मादाओं को गर्भित किया जा सकता है।
- (v) इस तकनीकी द्वारा नर से मादा पशु से कोई संक्रामक बीमारी के फैलने का भय नहीं रहता है।

27. पशुओं के निम्न महत्वपूर्ण सूक्ष्म विषाणु रोग निम्न है : 5

- (i) शीतला माता रोग,
- (ii) मुँह व खुर रोग
- (iii) हल्कावन रोग
- (iv) चेचक रोग
- (v) संक्रामक चर्म रोग आदि

गाय में मुँह व खुर रोग के निम्न लक्षण है :

- (i) गाय को 104-105°F तक ज्वर होता है।
- (ii) गाय के मुँह, जीभ के निचले तलवे, होट, मसूड़ों में छाले (बड़े-बड़े) पाये जाते हैं जिनसे लार टपकती है और गाय को बहुत दर्द होता है।
- (iii) ये छाले बाद में अल्सर का रूप धारण कर लेते हैं जिससे गाय अपना आहार नहीं खा पाती है। यह दशा 3-5 दिन चलती है और पशु कमजोर हो जाता है।
- (iv) गाय के मुँह से चीप-चीप की आवाज लार के साथ आती है और गाय को कम्पन्न होनी शुरू हो जाती है।

- (v) जैसे ही गाय अपने मुलायम अंगों को चाटती है वहाँ पर भी छाले पड़ जाते हैं।
- (vi) छालों से बने घाव से विशेष प्रकार की गन्ध आती है। जिससे कीड़े देने वाली मक्खी आकर्षित होकर कीड़े दे देती है।

या

गाय के स्थाई दाँतों का फॉर्मूला निम्न है :

	दाँत	दाढ	दाढ	कुल
ऊपरी जबड़ा	0+0	3+3	3+3	] 32
निचला जबड़ा	4+4	3+3	3+3	

पशु की आयु का अनुमान निम्न बातों से किया जाता है।

- (i) सामान्य आकृति व दशा देखकर पशु की उम्र का पता अनुमान किया जा सकता है। छोटी आयु के पशु की शारीरिक बनावट, चमड़ी की चमक अधिक होती है जो उम्र के साथ शरीर बढ़ती है परन्तु चमक घटती है।
- (ii) **खुर द्वारा** : छोटी उम्र के खुर छोटे तथा चमकीले होते हैं परन्तु बढ़ती उम्र में ये चौड़े तथा खुरदार हो जाते हैं।

- (iii) **सीगों द्वारा** - सीगदार पशु की उम्र उसके सीग के छल्ले से करते हैं। तीन साल की उम्र में एक छल्ला बनता है और बाद में प्रत्येक वर्ष एक छल्ला बनता है। छल्लों की संख्या में 2 जोड़ने पर पशु की उम्र पहँचानी जा सकती है।
- (iv) **दाँतों द्वारा** : पशु के दाँत की चमक एवं घीसाई तथा उनके टूटने आदि से पशु की आयु का लगभग ठीक अनुमान लगाया जा सकता है।

